शिक्षक - रवि शंकर राय | विषय - अर्थशास्त्र (2nd Lecture)
दिनांक - 27-07-2020 | वर्ग - B.A-II (

xiii) भारतीय उत्पादों के लिए बढ़ते हुए भावी निर्यात

IX) वृहत्त क्षेत्र में हरित इकाईयों की बढ़ती संख्या के कारण अनुषंगी इकाइयों की आवश्यकता में वृद्धि। लघु उद्योग क्षेत्र ने बहुत बढ़िया प्रदर्शन किया हैं और अपने देश को औद्योगिक वृद्धि तथा ~~विविधता~~ विविधता के बड़े परिणाम प्राप्त करने में समर्थ बनाया हैं।

कम पूंजी लगने और उच्च श्रमिक समावेशन प्रकृति द्वारा लघु उद्योग क्षेत्र ने रोजगार सृजन और ग्रामीण औद्योगिकरण में उल्लेखनीय योगदान किया हैं। प्रौद्योगिकी के सम्मिलन, पूंजी और अभिनव विपणन व्यवहार द्वारा अपने परंपरागत कौशल और ज्ञान को सुदृढ़ करने के लिए ~~योगदान किया हैं। प्रौद्योगिकी~~ यह एक आदर्श क्षेत्र हैं। लघु उद्योग क्षेत्र में परियोजनाएं स्थापित करने के लिए यह सुअवसर हैं। यह कहा जा सकता हैं कि यदि कुछ सुरक्षा उपाय रखे जाए तो स्थिति सकारात्मक ही नही वरन् आशाजनक हैं। यह अपेक्षा भारतीय उद्योग और मांग ढांचे की आवश्यक विशेषता पर आधारित है। उत्पादन प्रणाली और मांग ढांचे में विविधता उपभोक्ता उत्पादो/प्रौद्योगिकियों/संभावना के लिए मांग के अनेक स्तरों के दीर्घावधि सह-अस्तित्व को सुनिश्चित करेगी, वहां गुणवत्ता, मूल्य संवर्धन और कृत्रिमता द्वारा भिन्न किए गए समान उत्पाद/संसाधन के लिए समृद्ध तथा सुस्थापित बाजार हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था की यह विशेषता इकाइयों के विभिन्न विविध प्रकारों के लिए सम्मानित उपस्थिति की अनुमति देती हैं। सरकार की संवर्धक और सुरक्षात्मक नीतियाँ ने उत्पादो विशेषकर उपभोक्ता सामानो की एक आश्चर्यजनक श्रृंखला में इस क्षेत्र की उपस्थिति सुनिश्चित की है। यद्यपि पूंजी, प्रौद्योगिकी और विपणन की ~~कमी~~ कमियां इस क्षेत्र में बड़ी बाधाएं बनी रही हैं।

Q- लघु उद्योग क्या है? इसके महत्व तथा फायदे को बताएं।

A-> आप सभी ने लघु उद्योग के बारे में कभी-कभी सुना होगा। लघु उद्योग अर्थात Small scale industries सम्पूर्ण औद्योगिक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र हैं जहाँ पर रोजगार क्षमता न्यूनतम पूँजी लागत पर हैं।

यह एक ऐसा उद्योग हैं जिससे कोई व्यक्ति छोटे पैमाने पर शुरु करके आर्थिक रूप से सशक्त हो सकता हैं। छोटी-छोटी मशीनों, कम लागत, कम श्रमशक्ति की मदद से सेवाओ और उत्पाद का निर्माण करना और उसे प्रदान करना, इस उद्योग में सम्मिलित हैं।

लघु उद्योग के श्रेणी में one time investment (एकमुश्त निवेश) एक करोड़ रुपयें से अधिक नही होते हैं। लघु उद्योगों में तकनीक की अपेक्षा श्रमशक्ति का ज्यादा उपयोग किया जाता हैं। फलस्वरूप यह उद्योग रोजगार के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। आर्थिक निर्धारण के आधार पर इस उद्योग को तीन प्रकार में वर्गीकृत किया गया हैं। इन उद्योगों को निर्माण क्षेत्र और सेवा क्षेत्र में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. सूक्ष्म उद्योग
2. लघु उद्योग
3. मध्यम उद्योग

निर्माण क्षेत्र के (Manufacturing enterprise) के MSME उद्यमों को plant और Machinery (भूमि और भवनों को छोड़कर) में निवेश की गई राशि के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है जो निम्न प्रकार हैं:—

* सूक्ष्म उद्योग या अति लघु उद्योग — 25 लाख तक का निवेश
* लघु उद्योग — 5 करोड़ रुपये तक का निवेश
* मध्यम उद्योग — 10 करोड़ रुपये तक का निवेश

सेवा ~~उद्यम~~ उद्यम (service enterprise) के लिए plant और Machinery (भूमी और भवनों को छोड़कर) में निवेश की गयी राशि के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है ~~जो~~ निम्न प्रकार हैं—

* सूक्ष्म उद्योग या अति लघु उद्योग — 10 ~~लाख~~ लाख तक का निवेश
* लघु उद्योग — 2 करोड़ रुपये तक का निवेश
* माध्यम उद्योग :— 5 करोड़ रुपयें तक का निवेश

2020 में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग की नयी परिभाषा —

13 मई 2020 से आर्थिक पैकेज के कारण जो संसोधन हुआ उस संसोधन के तहत भारत में अब सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग की परिभाषा अब बदल चुकी है। इस नए बदलाओं में विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र दोनों के लिए निवेश एवं सालाना Turnover तय किये गए हैं।

पहले जो केवल निवेश के आधार पर ही लिमिट तय की गयी थी उसमें अब Turnover भी देखा जायेगा, इस बार जो बदलाव हुए हैं उसमें ये भी देखने को मिल

रहा है कि इस बार विनिर्माण और सेवा क्षेत्र को विभाजित नहीं किया गया है। अब दोनों क्षेत्र के लिए निवेश के साथ-साथ वार्षिक Turnover भी देखा जायेगा जो इस प्रकार है:—

निर्माण क्षेत्र और सेवा क्षेत्र दोनों के लिए :-

* सूक्ष्म उद्योग - एक करोड़ तक का निवेश सालाना Turnover 5 करोड़ तक।
* लघु उद्योग :- 10 करोड़ तक का निवेश और सालाना Turnover 50 करोड़ तक।
* माध्यम उद्योग - 20 करोड़ तक निवेश और सालाना Turnover 100 करोड़ तक

लघु उद्योग के उदाहरण —

→ अगरबत्ती बनाना
→ मोमबत्ती बनाना
→ साबुन, तेल आदि ~~स्क्रैप~~ हर्बल बनाना
→ कपड़े और चमड़े का बैग बनाना
→ मसाला बनाना
→ डिस्पोजेबल कप-प्लेट बनाना
→ एल्यूमीनियम से बने हुए सामग्री बनाना
→ वॉल्ट मीटर बनाना
→ पेपर बैग बनाना

□ लघु उद्योग का महत्व —

लघु उद्योग बेरोजगारों को रोजगार प्रदान कर भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत में अपना